Vidhyayana - ISSN 2454-8596

An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal

www.vidhyayanaejournal.org

Indexed in: ROAD & Google Scholar

प्रत्यायन में नाट्यविद्या श्रेष्ठ

अमृतभाई आर तीरगर

आसिस्टेंट प्रोफेसर

श्री आई. जे. पटेल बी.एड. कॉलेज

मोगरी, आणंद - गुजरात.

amrut661975@gmail.com

जलदा वोरा

आसिस्टेंट प्रोफेसर

श्री आई. जे. पटेल बी.एड. कॉलेज

मोगरी, आणंद - गुजरात.

pandyajalda@gmail.com

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

❖ **सारांश**

प्रत्यायन, भारतीय साहित्य और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण शैली है जिसमें विभिन्न कलाएं एक संगीतिक प्रदर्शन के माध्यम से प्रस्तुत की जाती हैं। प्रत्यायन का मुख्य उद्देश्य दर्शकों को मनोभावना में ले जाना है। इसके माध्यम से नाट्यिक कलाकार अपने अभिनय से दर्शकों को भावनाओं का संग्रह करने का एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। नाट्यविद्या के साथ प्रत्यायन एक सांस्कृतिक यात्रा की भूमिका निभाता है जो दर्शकों को भारतीय साहित्य और संस्कृति के साथ मिलकर जीने का अवसर प्रदान करती है। प्रत्यायन में नाट्यविद्या समृद्धि और समरसता का संदेश देती है, जो साहित्य, संगीत, और नृत्य के साथ एक सांस्कृतिक अनुभव का आनंद लेने का एक अद्वितीय तरीका है। इसके माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझते हैं और उसे आगे बढ़ाने का संकल्प करते हैं। इस प्रकार, प्रत्यायन में नाट्यविद्या हमें साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समृद्धि की दिशा में अग्रणी बनाती है।

❖ **मुख्य शब्द :** नाटक , प्रत्यायन , नाट्य विद्या

❖ **प्रास्ताविक**

साहित्य के दो स्वरूप गद्य और पद्य। गद्य यानी केवळ पढ़ा जाय। पद्य पढ़ा और गान भी कीया जाय। गद्य में नाटक एक एसी विधा है जो पढ़ा भी जाता है, और गान के माध्यम से प्रकट कीया जाता है।नाटक शब्द की उत्पत्ति नट धातु से हुई है। नट का अर्थ अभिनेता। भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र मे लीखा है की, जिसने स्वभाव से ही लोग का सुख-दुःख समन्वित होता है, तथा अंगो आदि के द्वारा अभिनित किया जाता है, उसको नाटक कहते हैं। अरस्तु ने कहा है कि "नाटक जीवन की अनुकृति है।"सिसरा ने कहा हे कि "Drama is a Copy of light, a mirror of custom a reflection of truth" अर्थात् नाहक जीवन का प्रतिबिब है। रीतरिवाजो का दर्पण है, और सत्य की प्रतिक्रिया है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

आधुनिक हिंदी नाटको में भारतेंदु से लेकर आज तक नाटकों में रंगमंच के उपयुक्त नाटक रहे हैं। नाटककारो को भी प्रेरणा का पीयुष मिलता रहा है। आज के युग में सामाजिक तथा देशभक्ति पूर्ण कथानको से भी युग दूर रहा नहीं है। विषय की नवीनता के साथ कळा का जितना विकास होना चाहिये, उतना भारतेन्दु के सिवा अन्य नाय्यकारो में नहीं हैं। मौलिकता और नाय्यकीय गुणों का अभाव है। इन अभावो का कारण है, नाटक के तत्व, नाटक के तत्व के बिना नाटक पूर्ण नहीं होता।

❖ **नाटक के तत्व**

(१) कथावस्तु

नाटक की कथावस्तु मयाँदीत है। कथावस्तु क्रमबद्ध होनी चाहिए। आरंभ से अंत तक अबाध गति से चलना चाहिए।

(२) पात्र: चरित्र चित्रण

नाटक में अनेक पात्रो के माध्यम से घटना का विकास होता है। नाटक कथाको अग्रसर करता है। प्राचीन नाटयशास्त्र में नाटक सर्वगुण संपन्न होता था। आज एसा नहीं है। आज तो बुरा व्यक्ति भी नाटक का नायक होता है।

(३) कथोपकथन

नाटक का आधार कथोपकथन है। नाटक की सफलता और निष्फलता का आधार संवाद है। संवाद पात्र अनुरूप होना चाहिए।

(४) रंगमंच

रंगमंच स्थळ, काळ के अनुरुप वेशभूषा, रीति रिवाज मान्यता और परंपरा द्वारा दृश्य का निर्माण होना अत्यंत आवश्यक है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(५) भाषा शैली

भाषा की सरलता, प्रवाहशीळता और स्पष्टता नाटक की भाषाशैली के अनिवार्य गुण माने जा सकते हैं। वर्तमान नाटको मे बोलचाल की भाषाको ही प्राथमिकता दी जाती है।

(६) उद्देश्य

नाटक का उद्देश्य भी अप्रत्यक्ष रूप से पात्रो के संवाद मे से स्पष्ट होता है। इसके अतिरिक्त कोई भी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक हेतु हो सकता है। जीवन संदेश को मूल्य रूप में प्रकट करते है।

❖ **नाटक की विशेषताएँ**

→ नाटकमें घटनाएँ दृश्य आखों के सामने दिखाई देती है।

→ अतीत की घटनाओको पेश किया जाता है।

→ पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

→ देशकाल का संकेत दृश्यमे किया जाता है।

→ -भाव की अभिव्यक्ति के लिए केवल संवाद होते है।

→ -कम समय में ज्यादा प्रकट होता है।

→ भाषा सरल और स्पष्ट होती है।

→ कथावस्तु, चरित्र, भाव अभिनय से किया जाता है।

→ सभी रसो की अनुभूति होती है।

उपर्युक्त सभी विशेषताएँ को देखते हुए नाटक एक ऐसी विधा है जो वाचक और प्रेक्षक को लंबे समय तक रसानुभूति होती है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

युग बदलाता है, मनुष्य बदलाता है, जिने की रीत-भात बदळाती है, विचार-वर्तन बदलाते है "even" हमारी बोली और लिखने की भाषा बदळाती है। संक्षिप्त कहे तो "life style" बदलती है। इसमे नाटक भी बवळते है। रंगभुमी, रंगभूमी की सजावट, कळाकार विषय, संघर्ष विर्धवर्शक के विचारधार बदलते हैं।

परदेश के नाटक ओर परदेश के नाटककारो मे सेम्युअल बैकेट आईनेस्टको, प्रिन्टर टोम के नाटक के बाद प्रेक्षको का रस लूप्त हो गया। इसमें भारतीय नाटक में भी एसा हुआ इसका कारण था नाटक देखने वालो को समझ मे आये, इसमें रस हो, किन्तु नाटक तर्क पर आधारित थे। प्रतिक पर आधारित ये, जो प्रेक्षक को असमंजस में पड़ता था । नाटक थियेटर में भी चळा, किन्तु आज सुक्ष्म कथावस्तु को लेकर नाटक ही चलते है। आज रंगभूमि में एक दिशा बदलदी है। आज के नाट्य विधा में युवक युवती एक साथ काम करते है। एक नायक नही, किन्तु सामूहिक नाटक ऐसी पेटन बन गई है।

आज मेज और कुर्सी पर बैठकर नाटक लीखने की बात लुप्त हो गई है। आज के नाटककार के पास स्टेज का अनुभव हो, खुद नाटक कोरियोग्राफी कर सके, तजज्ञ हो, संक्षिप्त में कहे तो दिग्दर्शन कर सके, ऐसे नाटक कार नाटक लीख सके ये निश्चित है। आज कलाकार को लोगो की सूक्ष्मपिडा, पिडा के मेथोमंथन और ये सब पेक्षक को लगे की में खुद हम नाटक का नायक हूँ। मेरी समस्या टु बी और नोट टु बी को भिन्न स्वरुप देकर आज और कल दोनों को एक साथ लेकर नाटक बनाकर प्रस्तुत करना हो गया।

पहले फिल्म टेलीविजन से नाटक को बचना था, इसमे तिसरा शत्रु आ गया कम्प्युटर । इन्टरनेट पर सरफिग करना, फेशबुक में जाना, ब्लॉग मेल लीखना, वेबसाईट खोलना,डाउनळाड करना,इसके आधार पर नया नया दिखना।

इस प्रकार हमारे आधुनिक हिन्दी गद्य में नाट्यविद्या प्रत्यायन में सक्षम है, इसमें कोई शंका नहीं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संस्कृत साहित्य में कहा गया है कि - "काव्य में नाटक,नाटक में अभिज्ञानशाकुन्तल, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में चौथा अंक, और चौथा अंक में चौथा श्लोक श्रेष्ठ है"।

उपर्युक्त प्राचीन से लेकर नाटक की सभी बातें तत्व, विद्वानों की परिभाषा को, नाटक की विशेषताएं एवंम आज के साहित्य रसिक लोगो में साहित्य के जितने स्वरुप है उसमें से प्रत्यायन में सर्वश्रेष्ठ नाटक है इसमें कोई संदेह नही है। आज हम धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, कल्पनिक और सांस्कृतिक सिरियल टीवी के माध्यम से देखते है तब बच्चों से लेकर बुजुर्ग अपने अपने रस के अनुरुप देखकर जीवन जिने की कला महसूस करते हैं।

इति श्री.....

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

❖ सन्दर्भ

1. नेमिचन्द्र जैन - रंगदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरी आवृत्ति: 2010
2. रीतारानी पालिवाल - रंगमंच: नया परिदृश्य
3. रमेश राजहंस - नाट्य प्रस्तुति: एक परिचय, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहली आवृत्ति: 1997
4. देवेन्द्र राज अंकुर - रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र